

# शैलीविज्ञान आ' शिशु-बोलीक विकास: एक विवेचन

डा. विजयेन्द्र झा<sup>1</sup>, डा. सुरेन्द्र भारद्वाज<sup>2</sup>, डा. राधा कुमारी<sup>3</sup>, डा. सुमन कुमार<sup>4</sup>, निशु कुमारी<sup>5</sup>

<sup>1</sup> पूर्व प्राचार्य, सम्पति अध्यक्ष, मैथिली विभाग, एल. एन. टी. कालेज (अंगीभूत एकाइ, बी. आर. ए. बी. यू), मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत

<sup>2</sup> वरीय सहायक प्राचार्य, मैथिली, सी. एम. कालेज (अंगीभूत एकाइ, एल. एन. एम. यू), दरभंगा, बिहार, भारत

<sup>3</sup> अध्यक्ष, मैथिली विभाग, पूर्णियाँ विश्वविद्यालय, पूर्णियाँ, बिहार, भारत

<sup>4</sup> अध्यक्ष, मैथिली विभाग, एम. एल. टी. कालेज (अंगीभूत एकाइ, बी. एन. एम. यू मधेपुरा), सहरसा, बिहार, भारत

<sup>5</sup> निशु कुमारी, एम. ए, यूजीसी-नेट (मैथिली), एल. एन. एम. यू, दरभंगा, बिहार, भारत

**सारांश—**शोधालेख "शैलीविज्ञान आ' शिशु-बोलीक विकास" मे शैलीक प्रसंग विस्तारसँ विमर्श कएल अछि, जाहिमे शैली आ' शिल्पकै पृथक्-पृथक् परिछाओल गेल अछि। शैलीक अन्तर्गत ओकर विभिन्न अंग-उपांगक व्याख्या कएल अछि, जेना. शैलीक वर्गीकरण, जाहिमे साहित्यशास्त्र आ' भाषाविज्ञानक आधारपर उद्भूत शैलीकै फराक-फराट रूपै फरिछाओल गेल अछि; ताहुमे साहित्यशास्त्रमे प्रयुक्त विविध प्रकारक शैली, जेना. प्रसाद शैली आ' समास शैली एवं ओकर भेदोपभेद सभ- संयत शैली, प्रलाप शैली, व्यंग्य शैली आदिकै मैथिली उदाहरणसँ संपुष्टि कएल अछि जाहिसँ शोधार्थी वा अनुसंधितसुलोकनिकै बुझामे कोनो प्रकारक विशेष समस्या नहि होइन्हि। एहिना भाषाविज्ञान आधारित शैलीमे प्रयुक्त भाषाक प्रकृति आ' संरचना-तत्वक वैज्ञानिक विशेषण भेल अछि, जाहि मध्य भाषाक विभिन्न तत्व- ध्वनि, शब्द, रूप, वाक्य, अर्थ आदि तथा शैलीक आधारपर वाक्य-प्रभेद -- जेना, शिथिल वाक्य, समीकृत वाक्य, आवर्त वाक्य आदिक विस्तारसँ चर्चा भेल अछि। संगहि, शिशु-बोलीक विकासक प्रसंग बच्चाक विविध बोलीकै उद्धृत कएल अछि। उपर्युक्त आलेख शिक्षकबंधु, शोधार्थी, अनुसंधित्सु आ' मैथिली-प्रेमीलोकनिक लेल अवश्य उपयोगी सिद्ध हएत, एहन हमर विश्वास अछि।

**बीज-शब्द—**आवर्त वाक्य, ध्वनि, प्रसाद शैली, भाषाशास्त्र, शब्द, रूप, वाक्य, शिल्प, शिथिल वाक्य, शैलीविज्ञान, समास शैली, समीकृत वाक्य, साहित्यशास्त्र

## I. प्रस्तावना

शैलीविज्ञानक शब्दक निर्माण दू शब्दक मेलसँ भेल अछि- 'शैली' आ' 'विज्ञान'। एकर शब्दिक अर्थ होइत अछि 'शैलीक विज्ञान'। अर्थात् जाहि विज्ञानमे शैलीक वैज्ञानिक आ' सुव्यवस्थित कएल जाइछ ओकरा शैलीविज्ञान कहल जाइत

अछि। 'शैली' शब्द अंग्रेजीक 'स्टाइल' शब्दक मैथिली रूपान्तर थिक। एहिना 'शैलीविज्ञान' कैं आंगल भाषामे 'स्टाइलिस्टिक्स' कहल जाइत अछि।

भाषाविज्ञानक ई कोनो नबीन शाखा नहि थिक। पूर्वमे जेनेवा इसकुलक किछु भाषाशास्त्रीलोकनि आओर किछु फ्रेंच भाषाक विद्वानलोकनिक ध्यान एहि दिसि गेलनि। प्रसिद्ध भाषाशास्त्री 'सस्यूर', 'शब्द चार्ल्स बेली' आदिक नाम एहि क्षेत्रमे प्रसिद्ध छनि। 'बेली' महोदय रैशनल स्टाइलिस्टिक्स'क जन्मदाता छलाह। पाश्चात्य विद्वान् 'बफाँक'क एहि प्रसंग विचार छनि - "Style is the man himself." वस्तुतः प्रत्येक व्यक्तिक शैली ओकर व्यक्तित्वक अनुकूल होइत अछि। मुदा, शैलीकै एतेक संक्षिप्प रूपै परिभाषित करब संतोषजनक नहि होयत। भाषाक संदर्भमे शैलीक सम्बन्ध अभिव्यक्तिसँ अछि। प्रत्येक भाषामे ध्वनि, शब्द-समूह, रूप-रचना आ' वाक्य-गठन आदिक दृष्टिएँ अभिव्यक्तिक एकटा सामान्य ढंग कहल जा सकैछ। जँ कैओ लेखनमे वा बजबामे एहि सामान्य रूपक प्रयोग करैत छथि, तँ हुनक कोनो शैली नहि मानल जाइत अछि। शैली हुनक मानल जाइछ जे सामान्य रूपै ध्वनि, शब्द-समूह रूप-रचना आ' वाक्य-गठन आदिकै त्यागि किछु विशेष रूप अपनबैत छथि। एहि प्रकारैँ शैली विशेषक लेल ई आवश्यक अछि जे सुनिकाए भाषीक एकाइक लेल एहन शब्दक प्रयोग होअए जे सामान्यक तुलनामे किछु विशेष आ' फराक होअए। भाषा समाजक होइत अछि; मुदा, शैली कोनो एक व्यक्तिक अथवा वैयक्तिक होइत अछि। जेनाकि पूर्वमे कहि चुकलहुँ अछि, शैलीक मूल आधार अछि चयन। एतए चयनक तात्पर्य कोनो भाषामे प्रयुक्त ध्वनि, शब्द, रूप, वाक्य, आदिक चयन। लोक अपन आवश्यकता आ' अभिरुचिक अनुकूल चयन क' कए अपन बातकै व्यक्त करैत अछि। एहि चयनक पहिचानक

आधारहिंपर हमरालोकनि कोनो पैराग्राफ, पाठ, छन्द आदि देखिकें ई कहि सकैत छी जे ई तँ प्रो. रमानाथ बाबूक शैली थिकनि; ई डा. मुरलीधर झाक नहि भा' सकैत अछि। वस्तुतः प्रत्येक ख्यातिनामा साहित्यकारक अपन पृथक्-पृथक् शैली होइत छनि जे एहि चयने पर आधारित रहैत अछि। कोनो वस्तुकै लिखबाक लेल दूइटा रीति होइत अछि- 'भाव' आ' 'भाषा', जकर महत्व समान होइछ। बिनु भावक ने तँ भाषाक सृष्टि होइत अछि आ' ने बिनु भाषाक भावकै अभिव्यक्ति कएल जा सकैछ। ई परस्पर एक दोसरक अभावमे पंगु रहत। एहि प्रकारै देखैत छी जे जतए परिमार्जित भावक संग परिमार्जित भाषाक मेल होइत अछि, ओतहिं शैलीक निर्माण होइत अछि। मुदा, जतए कोनहुँ एकटाक परिमार्जनक अभाव रहैत अछि, ओतए शैलीक कोनो प्रश्न नहि उठैत अछि।

अधलाह आ' अप्रशंसनीय शैलीमे पाठककै शब्द-जालमे भटकाओल जाइत अछि आ' पाठक सहजतासँ भावकै हृदयंगम करबामे समर्थ नहि भा' पबैत छथि। जँ भाव अपरिमार्जित आ' विश्वखल होयत, तँ

ओकरा सहजतासँ हृदयंगम नहि कएल जा सकैछ। एहिना जँ भाषा दोषपूर्ण होयत तँ पाठक ओकरा तल्लीनतासँ हृदयंगम नहि क' सकताह।

प्रत्येक व्यक्तिक भाव ओ भाषामे अन्तर होइत छैक, तँ प्रत्येक व्यक्तिक शैलीमे सेहो अन्तर पाओल जाइत अछि। प्रत्येक व्यक्तिक पहिचान ओकरा शैलीसँ होइत छैक। बहुत लोक 'शैली' आ' शिल्पकै एके बुझैत छथि, मुदा, से कथमपि उचित नहि। शैली आन्तरिक रूप थिक तँ शिल्प वाहा रूप। जेना- आत्मा शैली थिक तँ शरीर शिल्प। जँ शरीरकै शैली मानव तँ शरीरक सुन्दरता लेल उपरस्स कएल गेल वाहा प्रसाधन, जेना, अंगा, टोपी, कुरता, पाजामा, पनही, ओकर शिल्प भेसाहित्यशास्त्रकल जे शरीरकै सौन्दर्य प्रदान करैत अछि।

शैली विज्ञानक अध्ययनक दृष्टिएँ मुख्यतः दू दिशा प्रचलित अछि- (क) साहित्यशास्त्रक आधारपर तथा (ख) भाषाविज्ञानक आधारपर।

#### (क) साहित्यशास्त्रक आधारपर:

एहि आधारपर कोनो साहित्यकार अर्थात् कवि, लेखक आदिक कृतिक शैलीक वैज्ञानिक अध्ययन कएल जाइत अछि। अर्थात् रस, अलंकार, वक्तोक्ति, रीति, ध्वनि, गुण, दोष, वृत्ति, प्रवृत्ति, बिम्ब, छन्द, आदिक आधारपर देखल जाइत अछि अथवा कवि साहित्यशास्त्रक अध्ययन कहाँ धरि कएलनि एवं कृति वा रचनाक शैलीमे साहित्यशास्त्रक

नियमक पालन सुव्यवस्थित ढंगसँ कहाँ धरि भेल अछि। एहि प्रकारक अध्ययन साहित्यशास्त्रे'क क्षेत्रान्तर्गत मानल जाइत अछि।

#### भाषाक आधारपर शैली

भाषाक आधारपर शैली दू प्रकारक होइत अछि- (1) प्रसाद शैली, (2) समास शैली।

#### (1) प्रसाद शैली:

जखन साधारण ढंगसँ कोनो बात सरल, सहज भाषामे कहल जाइत अछि, तँ ओकरा "प्रसाद शैली" कहल जाइत अछि। प्रसाद शैलीक पहिल लक्ष्य होइत अछि, "बोधगम्यता"। कहबाक तात्पर्य ई जे रचनाकार जे कहए चाहैत छथि, से सर्वसुलभ होइक। ख्यातिनामा आ' प्रसिद्ध रचनाकारक एहि शैलीमे, रचित रचनामे प्रसाद-गुण पाओल जाइत अछि। ओ अपन बात सतत साधारण आ' साफ ढंगसँ कहब बेसी पसिन करैत छथि। इएह कारण अछि जे हुनक भाषा ओझाराएल नहि होइत अछि। ओ अपन बात सतत साधारण आ' साफ ढंगसँ कहब बेसी पसिन करैत छथि। हुनक भाषा ओझाराएल नहि होइत अछि। ओ अपन बात सतत साधारण आ' साफ ढंगसँ कहब बेसी पसिन करैत छथि। इएह कारण अछि जे हुनक भाषा सहज आ' सुगम होइत अछि। वाक्य कर्खनहुँ छोट-पैघ होइछ, मुदा, ओ सरल होइछ। प्रसाद शैलीक सबसँ पैघ गुण ई होइत अछि जे लेखगाछक वाक्य छोट-छोट आ' सामान्य आ' सरल तथा गम्भीर भावकै सरल, सहज, आ' सुलभ भाषामे ओ सुबोध बनाए दैत अछि। द्रष्टव्य अछि निम्न उदाहरण :

गाछ छल आमक। नवगछुली। डेढ-द्वू हाथ मोट। खूब झमटगर। पात हरियर कचोर। ओकरा लखेँशिशिर ऋतु जेना अएबे नहि कएल।" - कांचीनाथ झा' किरण

"हम तँ कहब जे मैथिली साहित्यमे आलोचना एखन आरम्भो नहि भेल अछि।..... समालोचककै ततेक अधिक योग्यता अपेक्षित छन्हि जे विशेषज्ञ भेने ओ काव्यगत गुण-दोषक भलहिँ निवर्चन कए लेथु मुदा कविक हृदयकै स्पष्ट रूपैं चीहिगम्भीरसँ सकब जाहिसँ हृदयक उद्घारक प्रेरणा ओ प्रकारकै बूझि सकब साधारणसँ अधिक अध्ययन अनुशीलन ओ अध्यवसाय चाहैत छथि।" /- (प्रो. रमानाथ झा)

"विशेषतः प्रार्थनीय हमर मैथिल बन्धुगण ओ थिकाह जे संस्कृत, अंग्रेजी वा हिन्दी प्रवृत्तिक कोनहुँ भाषामे पाटब पाबि मैथिली दिशि कनडेरियो नहि दैत छथि। एहि उपेक्षासँ मैथिलीक बड पैघ हानि होइछ। तँ उचित थिक जे एहन उदासीनगणकै ताकि ताहि रूपैं हुनका लोकनिक आराधना करी जाहिसँ ओ लोकनि प्रसन्नवित भए मैथिली दिशि आर्द्र दृष्टि देथि।"

(पं. मुरलीधर झा)

**(2) समास शैली:**

भाषाक लेल समास शैली अत्यन्त प्रसिद्ध अछि। कोनो बातकॅ कठिनसँ कठिन शब्दमे अभिव्यक्त करब ; साधारण भाषाक प्रयोग नहि कए, असामान्य भाषाक प्रयोग करब एहि शैलीक लक्ष्य होइत अछि। तें समास शैलीक भाषा कठिन, दुरुह आ' जटिल होइछ। एहिमे शब्द प्रायः संस्कृत-तत्सम रूपक होइत अछि आ' तकरो प्रायः संधि द्वारा मिलाए देल जाइत अछि। समास शैलीक वाक्य प्रायः मिश्र आ' संश्लिष्ट होइत अछि, भाषा स्वभावतः जटिल भ' जाइत अछि। इएह कारण अछि जे समास शैलीक भाषामे भावक संक्षिप्तता आ' भाषाक विस्तार देखल जाइत अछि। समास शैलीक किछु उदाहरण निम्न अछि:

"एहना सुअवसरमे हुनकापर अभिक्रम अहाँक विशेष आयास व्यक्तिरेकहि सफल होयत।"

----- (म. म. पं. मुकुन्द झा' बक्सी)

" संशयमेघक छिडिआयल अंश मानसिक क्षितिजक तटपर घूरि-फीरि अनिश्चयात्मिका बुद्धिरूपी वायुक धक्कासँ तितिर-बितिर भए जाइछ।"

----- (प्रो. बुद्धिधारी सिंह)

" यद्यपि बालकृष्ण बाबूक सदृश निर्मल वैदुष्य, एहि रूपक निर्भ्रान्ति शास्त्रीय संस्कार, एहन सर्वतोमुखी प्रतिभा ओ असाधारण व्युत्पत्ति, एतेकरास गुणराशिक एहन सम्मेलन बिनु आत्माक वैशेष्य, प्राक्तन संस्कार, जन्म-जन्मार्जित पुण्यक प्रभावैँ संभव नहि.....।"

----- (प्रो. रमानाथ झा)

## II. भावक दृष्टिएँ शैली

एहिना भावक दृष्टिएँ शैलीकैं तीन भागमे बाँटल गेल अछि :

1) संयत शैली, 2) प्रलाप शैली आ' 3) व्यंग्य शैली।

**(1) संयत शैली**

जाहि शैलीमे रचनाकार (लेखक) भावुकतामे नहि बहि, अपन भावपर नियंत्रण रखैत आ' अपन अभिव्यक्ति करैत छथि, तखन संयत शैलीक जन्म होइत अछि। संयत शैली भोरक शीतल बसात जेकाँ पाठकक हृदयमे प्रवेश कए रोम-रोमकैं पुलकित आ' प्रफूलित क' दैत अछि।

**(2) प्रलाप शैली :**

जखन रचनाकार वा लेखक अतिशय भावुकतामे बहि जाइत छथि, तें प्रलाप शैलीक जन्म होइत अछि। प्रलाप शैली अन्हड-बिहाडि जेकाँ लोकक हृदयमे उठैत अछि जे कखनहुँ

कखनहुँ चिन्तनक कछेरकैं सेहो तोडि दैत अछि। तें बेसीकाल एहि शैलीमे अतिशयोक्ति एवं अतिव्याप्तिक दोष पाओल जाइत अछि। मुदा, ई शैली भाव-प्रवण होइत अछि; श्रुतिकटु आ' कठोर नहि।

**(3) व्यंग्य शैली :**

व्यंग्य वाणीक चरमोकर्ष थिक। भाषाक चरम शक्तिक परिणाम व्यंग्य होइत अछि। एहि शैलीमे निबंधकार, आलोचक, समीक्षक वा रचनाकारकैं भाव आओर भाषा दुनूपर समान अधिकार रहैत छनि। तें ई शैली थोडेकै कठिन तें अवश्य होइत अछि, मुदा, श्रेष्ठ लेखक एकरहिँ आधार बनबैत छथि।

**(ख) भाषाविज्ञानक आधारपर :**

भाषाविज्ञानक आधारपर कोनो रचनाकार वा लेखकक रचनामे प्रयुक्त भाषाक प्रकृति आ' संरचना-तत्वक भाषावैज्ञानिक विश्लेषण कएल जाइत अछि। प्रकृति आ' संरचनाक आधारपर भाषाक पाँच तत्व मानल जाइछ - ध्वनि, शब्द, रूप, वाक्य आ' अर्थ। एहि आधारपर देखल जाइछ जे रचनाकारक भाषामे कतए ध्वनि-विचलन, ध्वनि-चयन, ध्वनि-सामानान्तरक प्रयोग कएल जाइत अछि। एहिना रूप-स्तर, वाक्य-स्तर तथा अर्थ-स्तरपर सेहो अध्ययन कएल जाइछ। वाक्यक स्तरपर वाग्धारा (मोहाबरा) आ' लोकोक्तिक विचलन आदिक अध्ययन एहिमे सेहो कएल जाइत अछि। एहि प्रकारै भाषाविज्ञानक आधारपर कृतिकारक भाषाक विश्लेषण अत्यन्त गभीरताक संग कएल जाइछ।

शैलीक अध्ययने शैली विज्ञान थिक। शैलीविज्ञानमे ओना तें समवेत रूपसँ ककरहुँ शैलीक अध्ययन होइत अछि, मुदा जै चाही तें शैलीविज्ञानक ध्वनि-शैलीविज्ञान, शब्द-शैलीविज्ञान, रूप-शैलीविज्ञान, वाक्य-शैलीविज्ञान तथा लेखन शैली-विज्ञान एकरा एहि पाँच शाखामे अध्ययनक सौविध्यैँ विभाजित कएल जा सकैछ, जाहिमे क्रमशः शैलीय प्रयोगक दृष्टिसँ ककरहुँ द्वारा प्रयुक्त ध्वनि, शब्द-समूह, रूप, वाक्य आ' लेखन करबाक हेतु मैथिलीमे प्रयुक्त किछु उदाहरण दिसि ध्यानाकृष्ट कराओल जाए सकैछ:

**ध्वनि :** एहि संदर्भमे ध्वनि चयन सभसँ महत्वपूर्ण तत्व थिक। क-क., ख-ख., ग-ग., ज-ज., फ-फ., आ-आँ आदि ध्वनिक चयन रचनाकारक विवेकपर निर्भर करैत अछि। जेना-कानून, खराप, गरीब, जहाज, फायदा, काकी, खटाउउस, गोबर, गमला, फसिल, डाक्टर आदि ध्वनिमे नीचाँ बिन्दा वा कोनो- कोनो मे अर्द्ध चन्द्रबिन्दुक प्रयोग कएल जाए सकैछ।

एहिना कतोक ध्वनि आ' संयुक्त व्यंजन आदिमे सेहो शैलीकार चयन करैत छथि। मूरख-मूर्ख, दडिभंगा-दरभंगा, अचरज-आश्वर्य, सूरज-सूर्य, ब्राह्मण-ब्राह्मण, चिन्ह-चिह्न, धरम-धर्म, जमाहरलाल-जमाहिरलाल आदि कतिपय उदाहरण देल जा सकैछ। उपर्युक्तमे सँ डा. भीमनाथ झाक शैलीमे पहिल रूप भेटत तँ डा. अमरेश पाठकक शैलीमे दोसर भेटत।

**शब्द:** प्रत्येक भाषामे अर्थक समानताक दृष्टिएँ शब्दक किछु वर्ग होइत अछि। शैलीकार ओहि वर्गमे सँ अपन आवश्यकतानुसार कोनो एक वर्गक शब्दक चयन क' लैत छथि। मैथिली-तुर्की, अरबी, फारसी, मैथिली-अंग्रेजी, मैथिली-संस्कृत आदिक स्तरपर मैथिलीक तीन गोट शैली अछि-तत्सम, तद्द्वव, विदेशजमे सँ प्रायः चयन कएल जाइछ, संगहि किछु शैलीकार देसज शब्दक विशेष आवेशी होइत छथि। एहि शब्द सबहिक उदाहरण द्रष्टव्य अछि- सहस्र- हजार, पुष्प-फूल-गुल, गृह-घर-मकान, मूर्ख-मूरख, बूढ-बुद्ध आदि। किछु लोक अप्रचलित शब्दक प्रयोगमे विशेष रुचि लैत छथि। एहिना किछु लोक नब-नब शब्द गढैत रहैत छथि। पंडित गोविन्द झा तथा रमानन्द झा 'रमण'क लेखनमे प्रायः एहन शब्दसभ अभडैत अछि। शब्दक क्षेत्रमे चयनक गुंजाइस प्रायः सर्वाधिक होइत अछि। मैथिलीमे दिन-प्रतिदिन, प्रतिमास, प्रतिवर्षमे शैलीय अन्तर देखबामे अबैत अछि। एहि अन्तरक मूल कारण अछि जे मैथिलीमे अद्यावधि मानक वर्तनीक निर्धारण नहि भा पाओल अछि।

**रूप :** रूपमे चयनक गुंजाइस सबसँ कम होइत अछि। तँ प्रत्येक भाषामे परिनिष्ठित रूप प्रायः निश्चित होइत अछि आ' ओहिसँ हटि कए प्रयुक्त शब्द-रूप अपरिनिष्ठित मानल जाइत अछि। संगहि किछु शब्दमे चयन सम्बव नहि भ' पबैछ कारण ओकर वितरण निश्चित भ' गेल रहैछ, जेना-कएल-कयल, दिस-दिसि, स-सय, बिमार-बीमार, सिखब-सीखब आदि। मैथिलीमे विभिन्न बोली आ' मानक वर्तनी निर्धारणक अभावमे उपर्युक्त दुनू रूप अपनाओल जाइत अछि। जेना-हिनक-हिनी, हम-हमे, तँ-तौँ- तौँहैं, ओ-वैं आदि। एहिमे पहिल मानक मैथिलीमे प्रचलित अछि तँ दोसर छिका-छिकी बोलीमे। एहिना अन्य अनेक शब्द -रूप अछि जे फराक अछि, जेना-अमातनि-अमातिनी, खबासिनि-खबासिनी, मलाहिनि-मलाहिनी, पंडितानी-पंडिताइनि आदि उदाहरण सेहो लेल जा सकैछ।

**वाक्य:** वाक्य रचनाक क्षेत्रमे चयनक बहुत अवकाश अछि। जेना-घरनीसँ घर-घरनीए घर, एहि दृष्टिसँ- एहि दृष्टिएँ, रामक लेल-रामहिक लेल, खा चुकल अछि-खएलक अछि, आदि अनेक वाक्यांश अछि। एहिना- आभड-खुभड= उभर-खाभड आदि। एहि प्रकारैँ शैलीक आधारपर वाक्यक तीन स्वरूप भेटैत अछि- शिथिल वाक्य, समीकृत वाक्य तथा आवर्त्त वाक्य। एहि तीनू वाक्यक बीच स्पष्ट विभाजन रेखा खिचब सम्बव नहि अछि। कखनहुँ काल एहिमे परस्पर सांकर्य सेहो देखल जाइत अछि। मुदा, स्थूल दृष्टिएँ ई भेद व्यावहारिक उपयोगीक होइत अछि।

(i) शिथिल वाक्य शैली- शिथिल वाक्य शैलीमे वक्ता वा लेखक एकक बाद दोसरक बातकैँ उन्मुक्त भावसँ, बिना कला वा अलंकरणक सहयोगैँ कहैत जाइत छथि। जेना- " अयोध्या सूर्यवंशी राजालोकनिक राजधानी छलनि। एतए जाहि समयक बात कहल गेल अछि ओहि समयमे महाराज दशरथ अयोध्याक राजा छलाह। महाराज वृद्ध भ' चुकल छलाह, मुदा हुनका एकोटा पुत्र नहि छलनि। एक दिन महाराज अपन कुलगुरु मर्हिषि वशिष्ठक आश्रममे जा कए गुरुदेवसँ संतानक लेल प्रार्थना कएलनि। "

उपर्युक्त उद्धरणमे लेखकक मनमे जाहि क्रममे विचार आयल ओही क्रमसँ वाक्य बनैत चलि गेल आ' एहिमे ने कोनो कला आ' ने कोनो अलंकारक प्रयोग कएल गेल अछि। तँ एकरा शिथिल वाक्य शैलीक अन्तर्गत राखल गेल अछि।

(ii) समीकृत वाक्य शैली- समीकृत वाक्य शैलीमे, संगति आ' संतुलनक नैसर्गिक मानवीय इच्छाक पूर्ति करैत छी। जेना- जेहने राजा ओहने प्रजा। जकर लाठी ओकर महींस। यतो धर्मस्तोजयः। कतए राजा खोज कतए खोजबा तेली? समीकृत वाक्यसँ दूटा व्यावहारिक लाभ होइछ। एक तँ वाक्य रचना एक पद्धतिपर भेलासँ ओकर अभ्यास करबामे सुगमता होइछ आ' दोसर ओहिसँ मनमे एक प्रकारक आनन्ददायक विस्मय होइत अछि। जेना- " चाहे विद्वान् निन्दा करए चाहे स्तुति, चाहे मृत्यु आइ भ' जाए चाहे सैकडो वर्षक बाद, चाहे लक्ष्मी आबाधि वा अन्यत्र चलि जाथि, मुदा जे धुनक पक्का होइत छथि, ओ कर्तव्य पथसँ कखनहुँ नहि विमुख होइछ। "

(iii) आवर्तक वाक्य- आवर्तक वाक्य शैलीमे चरम सीमा अन्तमे अबैत अछि। श्रोता आ' पाठक उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा करैत रहैत छथि आ' तखन हुनका समक्ष ई बात अबैत अछि जे वक्ता वा लेखक हुनका बुझबए चाहैछ। एहि श्रेणीक वाक्य

वक्ता आ' नेतालोकनिक द्वारा बेसी उपयोग कएल जाइछ। जेना- " जँ हम चाहैत छी जे हमर स्वतंत्रता सुरक्षित रहए, जँ हम चाहैत छी जे हमरा देशक सीमा दिसि शत्रुकॅ देखबाक हिम्मति नहि होअए, जँ हम चाहैत छी जे भारतक शिक्षा, कृषि आ' उद्योगक क्षेत्रमे निरन्तर प्रगति करैत रहय, तँ हमरालोकनिकॅ आपसी भेदभाव बिसरि कए राष्ट्रीय एकताकॅ सुट्ट बनाब पडत। "

शैलीक दृष्टिएँ वाक्यक विचार वस्तुतः भाषाविज्ञानक क्षेत्रमे नहि अबैत अछि। एकर विचार काव्यशास्त्रमे होइत अछि। मुदा, वाक्यक भेदपर विचार करबाकाल ओकर चरचा करब आवश्यक छल, तेँ एतए एहिपर सेहो विचार भेल अछि। वाक्य-प्रयोग करबाकाल एकहि संग चिन्तन, उपयुक्त पदक चयन, व्याकरणिक गठन, आ' उच्चारणसँ काज लेबए पडैछ। ई प्रक्रिया अति जटिल अछि। उच्चारणक पहिने चिन्तन आवश्यक अछि, मुदा चिन्तनक गति आ' उच्चारणक गतिकॅ एतेक संतुलित होबक चाही जे ओहिमे केओ पिछडि नहि जाए। जतए चिन्तन पिछडि जाइछ ओत' वक्ता रुकि-रुकि कए बजबाक लेल बाध्य भ' जाइछ, जाहिसँ भाषणक सौन्दर्य नष्ट भ' जाइत अछि आ' जँ चिन्तनक गति तीव्र भ' गेल तँ ओकरा अनुपातमे आचरणक गति तीव्र भ' गेलासँ उच्चारण अस्पष्ट आ' प्रभावहीन भ' जाइछ। वाक्यक संतुलित प्रयोग शैली शिक्षा आ' अभ्यासे सँ संभव अछि। चूकि वाक्य भाषाक एकाइ थिक, तेँ ओहिपर ध्यान देब आवश्यक अछि।

वस्तुतः शैलीविज्ञान एखन पूर्ण रूपैँ विकसित नहि भेल अछि। उपर्युक्त विवरण एतए ओहि रूपैँ राखल अछि, जाहि रूपैँ अद्यावधि मैथिली भाषा-साहित्यमे मान्य अछि। ओना एहि क्षेत्रमे बेसी विकास आ' कार्यक संभावना अछि।

#### शिशु-बोलीक विकास :

'आंटोजेनी' (व्यक्ति-विकास) शब्दक प्रयोग पहिल बेर 1870 ई.क करीब मनुख वा जीवनक विकास लेल कएल गेल छल। ई शब्द मूल रूपैँ जीवविज्ञानक थिक। आधुनिक कालमे भाषाविज्ञानीलोकनि एकरा संग लिंगिस्टिक शब्द जोडि "लिंगिस्टिक आंटोजेनी" शब्दक निर्माण कएलनि। तथा भाषाविज्ञानक शाखाक रूपमे एकरा स्वीकार कएलनि। एकरा अन्तर्गत एक व्यक्तिक भाषा वा बोलीक जन्मसँ ल' मृत्यु धरिक विकासक अध्ययन कएल जाइछ। नेनासबहिक भाषापर पाश्चात्य विद्वानलोकनिमे आर्विम सी. इरविन, मैकार्थी, वाट्स, लियोपोल्ड, याकोब्स, ब्रैंडनबर्ग, डेलाक्रवायक्स, केलांग, स्टर्न, कैज तथा भारतीय विद्वान् सिद्धेश्वर शर्मा आदिक अवदान अत्यन्त महत्वपूर्ण अछि।

सैद्धान्तिक दृष्टिएँ एहि प्रसंग 'हाकेट' महोदयक विचार सेहो विशेष महत्वपूर्ण अछि।

छोट बच्चामे भाषा सन कोनो वस्तु नहि होइछ, मुदा, ओकरा कानि कए वा अंग पटकि कए अपन प्रतिक्रिया दैत देखल जा सकैछ। इएह प्रतिक्रिया ओकरा लेल ओकर भाषा बनि जाइछ। समय आ' परिस्थितिक आधारपर अभिभावक बच्चाक प्रतिक्रियासँ ओकर भूख वा पीडा आदिक संकेत बूझि जाइत छथि। एहिना पीठ ठोकलाक अभ्यासपर अथवा बैसाए देलापर क्रमशः सुतबाक आ' शौच करबाक संकेत बच्चा बूझि जाइत अछि। एहि प्रकारैं बच्चा अपन मायक इशारा बूझाय लगैत अछि। एहना स्थितिमे विचारक आदान-प्रदान बच्चा अपन छोट अवस्थहिसँ करए लगैत अछि, मुदा यथार्थमे एकरा भाषाक संज्ञा नहि देल जा सकैत अछि। दुनूमे बहुत अन्तर अछि।

एहि प्रकारैं बच्चामे समयक संग अनुकरणक प्रवृत्ति आबि जाइत अछि, संगहि प्रारंभमे ओ ठोर आ' जीहसँ बिना कोनो उद्देश्यकॅ ध्वनिक उच्चारण करए लगैत अछि। ओना तेँ जन्म लितहिं बच्चा कनबाक रूपमे हँ, कँ, यँ, औँ इत्यादि ध्वनिक उच्चारण करए लगैछ। मुदा, शीघ्रहिं ओ अन्य ध्वनिक उच्चारण सेहो करए लगैछ। विद्वानलोकनिक मत छनि जे बच्चा पहिने दुनू ठोरसँ बाजएवला ध्वनि उच्चरित करैत अछि, मुदा ई बात पूर्ण रूपैँ सत्य नहि अछि। ध्वनिक उच्चारणमे विकासक अध्ययन पर्याप्त सावधानीसँ कएल गेल अछि। प्रारंभमे बच्चा 'किहाँ-किआँ' एहि प्रकारक ध्वनिक उच्चारण करैछ। करीब दू महिना भेलापर 'धी-धी', 'अबू-अबू', 'अफ-अफ', 'हूँ-हूँ', 'अss', 'अँ', 'ग-ग' आओर घोष ध्वनिक एतए प्राधान्य मानल जाइत अछि। ओना किछु एहनो चिह्नका देखल जाइछ जे म, प, ब आदि ध्वनिक उच्चारण एहि अवधिमे विशेष रूपैँ करैत अछि। एहि प्रकारक अर्नाल ध्वनि-समूहसँ बच्चाक ध्वनि उच्चारणक अभ्यास बढैत अछि आ' धीरे-धीरे अभ्यासक आधारपर सरलतासँ अनुकरण करए लगैत अछि। प्रारंभमे ओकर सफलता एतेक होइत अछि जे 'मामा'कॅ 'मा' आओर 'पापा'कॅ 'पा' आदि रूपमे कहए लगैत अछि; मुदा, पश्चात् कालक्रमे ई कमी दूर भ' जाइत अछि। प्रारंभमे मौखिकक स्थानपर अनुनासिक, अल्पप्राणक स्थानपर महाप्राण आ' महाप्राणक स्थानपर अल्पप्राण, घोषक स्थानपर अघोष आ'अघोषक स्थानपर घोष आदिक उच्चारण करैत अछि। संघर्ष ध्वनि प्रायः ओकरा लेल कठिन होइछ। संगहि पार्श्विक 'ल' आ' लुण्ठित 'र' सेहो बच्चाक लेल कठिन होइत अछि। तेँ एहि दुनूक स्थानपर अधिकांश बच्चा 'न' आदिक उच्चारण करैत अछि। किछु

बच्चा 'र' धनिक उच्चारण पहिनहि पकड़ि लैत अछि आ' 'र' 'ड.' आदिक स्थानपर एकर उच्चारण करैत अछि। एहिना 'ट'क स्थानपर कतोक बच्चा 'त' धनिकें शीघ्र पकडैत अछि। जेना, लोटा-लोता, रस्सा- लस्सा, ताला-लाला, नेबो-लेबो, बेटा-बेता, लाठी-लाती, दलान-ललान आदि। धीरे-धीरे एहि प्रकारक धनि-त्रुटिकैं ओ स्वयं सुधारि लैत अछि। इएह थिक धनिक दृष्टिएँ बच्चाक बोलीक विकास।

प्रारंभमे बच्चा द्वारा प्रायः एक -एकटा शब्द बाजल जाइत अछि; मुदा ओ शब्द हमरालोकनिक दृष्टिसँ होइत अछि। बच्चाक दृष्टिएँ ओ एकटा वाक्य होइत अछि। जैं बच्चा 'दू' अथवा 'दूध' बजैत अछि तैं ओकर अर्थ भेल जे " हम दूध पीब" अथवा "हमरा दूध दे"। पश्चात् ओ व्याकरणिक आन बात सैद्धान्तिक दृष्टिएँ नहि, प्रायोगिक दृष्टिएँ सेहो सिखि लैत अछि। साउश्यक आधारपर सेहो शब्दक निर्माण बच्चा द्वारा एही समयमे प्रारंभ भ' जाइत अछि। बच्चामे एहि निर्माणक अर्थ भेल जे ओकरा मस्तिष्कमे बच्चाक भाषाक नियमितता अपन स्थान बनाबए लागल अछि। बच्चा जखन आपसमे खेलाइत - धुपाइत अछि तैं कोनो बच्चीकैं अपन संगी बच्चा द्वारा 'सहेली' शब्द कहलापर स्वयं कए ओकरा 'सहेला' कहए लगैत अछि। एहि प्रकारैं कोनो बच्चा वा बच्ची 'ई' प्रत्ययकैं स्त्रीलिंग तथा 'आ' प्रत्ययकैं पुलिंगसँ स्वतः परिचित भ' जाइत अछि। एतेक ज्ञान भेलाक बाद बच्चा शीघ्र भाषा सिखेलगैत अछि।

एहिना 'फोनिम' आ' अर्थक दृष्टिएँ सेहो धीरे-धीरे विकास होइत अछि। छओ-सात वर्षक अवस्था धरि पहुँचितहिँ बच्चा अपन भाषाकैं थोड-बहुत सिखि लैत अछि। ओकर आधारभूत शब्द-समूहसँ परिचित भ' जाइत अछि। पश्चात् ओकरामे शब्द-समूह, मोहाबरा तथा शैली आदिक दृष्टिएँ विकास होमय लगैछ आ' स्वतः ई विकास ओकर व्यवसाय, वातावरण, आदिपर निर्भर करैत अछि, मुदा धनि वा व्याकरणिक दृष्टिसँ मनुखमे भाषाक विकास स्वतः नहि होइत अछि।

### III. उपसंहार

प्रस्तुत शोधालेखक "शैलीविज्ञान आ' शिशु-बोलीक विकास" मे शैलीक प्रसंग विस्तारसँ विमर्श कएल अछि, जाहिमे शैली आ' शिल्पकैं पृथक-पृथक परिछाओल गेल अछि। शैलीक अन्तर्गत ओकर विभिन्न अंग -उपांगक व्याख्या कएल अछि, जेना- शैलीक वर्गीकरण जाहिमे साहित्यशास्त्र आ' भाषाविज्ञानक आधारपर उद्भूत शैलीकैं फराक-फराट रूपैं फरिछाओल गेल अछि। ताहुमे साहित्यशास्त्रमे प्रयुक्त विविध प्रकारक शैली, जेना- प्रसाद शैली आ' समास शैली एवं

ओकर भेदोपभेदसभ- संयत शैली, प्रलाप शैली, व्यंग्य शैली आदिकैं मैथिली उदाहरणसँ संपुष्टि कएल अछि जाहिसँ शोधार्थी वा अनुसंधित्सुलोकनिकैं बुझबामे कोनो प्रकारक विशेष समस्या नहि होइन्हि। एहिना भाषाविज्ञान आधारित शैलीमे प्रयुक्त भाषाक प्रकृति आ' संरचना-तत्वक वैज्ञानिक विश्लेषण भेल अछि, जाहि मध्य भाषाक विभिन्न तत्व- धनि, शब्द, रूप, वाक्य, अर्थ आदि तथा शैलीक आधारपर वाक्य-प्रभेद जेना, शिथिल वाक्य, समीकृत वाक्य, आवर्त वाक्य आदिक विस्तारसँ चर्चा भेल अछि। संगहि, शिशु-बोलीक विकासक प्रसंग बच्चाक विविध बोलीकैं उद्धृत कएल अछि। उपर्युक्त आलेख शिक्षकबंधु, शोधार्थी, अनुसंधित्सु आ' मैथिली-प्रेमी लोकनिक लेल अवश्य उपयोगी सिद्ध हएत, एहन हमर विश्वास अछि।

### संदर्भ सूची

- [1] झा डा. विजयेन्द्र, 2022, मैथिली भाषाविज्ञान, मुजफ्फरपुर : प्रतिभा प्रकाशन, पृ. 183-90
- [2] झा, डा. विजयेन्द्र, 2021., मैथिली व्याकरण ओ रचना, मुजफ्फरपुर: प्रतिभा प्रकाशन
- [3] झा पं. गोविन्द, 1987, मैथिलीक उद्घम ओ विकास, कलकत्ता: मैथिली प्रकाशन समिति; 1987, पटना: मैथिली अकादमी
- [4] झा पं. गोविन्द, 1974, मैथिली भाषा का विकास, पटना: बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादेमी पृ. 68
- [5] 'व्यथित' डा. बालगोविन्द झा, 1968, मैथिली निबंधावली, पटना: भारती भवन, पृ. 5-9
- [6] मिश्र डा. नवीन चन्द्र, डा. शिवानन्द ठाकुर, 1984, मैथिली भाषाविज्ञान, दरभंगा : मिथिला पुस्तक केन्द्र
- [7] झा पं. दीनबंधु साल 1353, (1946), मिथिला भाषाकोष, दिङभंगा: मैथिली साहित्य परिषद् ; 2018, पटना: शेखर प्रकाशन
- [8] मिश्र डा. धीरेन्द्र नाथ, 1985, मैथिली भाषाविज्ञान व्याकरण ओ रचना/ मैथिली भाषाविज्ञान (1986), पटना: भवानी प्रकाशन
- [9] झा, पं. राजेश्वर, 1975, अवहट्टु :उद्धव ओ विकास,पटना: मैथिली साहित्य संस्थान
- [10] शर्मा डा. रामविलास, 2001, ऐतिहासिक भाषाविज्ञान, राजकमल प्रकाशन
- [11] झा पं. गोविन्द, 2011, भाषाशास्त्र प्रवेशिका, दीनबन्धु प्रकाशन

- [12] झा सुभद्र, 1958, द' फार्मेशन आफ मैथिली लैंग्वेज, लन्दन
- [13] चाटुर्ज्या सुनीति कुमार, 1926, आरिजिन एण्ड डिवलपमेंट आफ बंगाली लैंग्वेज, कलकत्ता
- [14] ग्रिअर्सन, जार्ज एब्राहम, 1885, बिहार पेजेन्ट लाइफ, कलकत्ता
- [15] झा पं. गोविन्द (सं.), 1999, कल्प्याणी कोश, दरभंगा: महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह कल्प्याणी फाउण्डेशन
- [16] झा पं. गोविन्द, 1979, उच्चतर मैथिली व्याकरण, पटना: मैथिली अकादमी
- [17] झा पं. गोविन्द, 2007, मैथिली परिशीलन, पटना: मैथिली अकादमी
- [18] झा डा. दिनेश कुमार, 1978, मैथिली काव्यशास्त्र, पटना: मैथिली अकादमी
- [19] व्याधित' डा. बालगोविन्द, 1988, मैथिली भाषा ओ साहित्य, पटना: किरण प्रकाशन
- [20] झा पं. शशिनाथ, 2009, निबन्धमन्दारमंजरी, दीप, मधुबनी: तीर्थनाथ पुस्तकालय
- [21] झा डा. अशोक कुमार, 2007, मैथिली भाषा: सर्वेक्षण आ' विश्लेषण, जमशेदपुर: मिथिला सांस्कृतिक परिषद्
- [22] झा पं. राजेश्वर, 1971, मिथिलाक्षरक उद्घव ओ विकास, रसुआर, सहरसा: श्री शम्भूनाथ झा
- [23] मतंग मतिनाथ मिश्र, (सं.), 1998, मैथिली शब्द कल्पद्रुम (पं. भवनाथ मिश्र विरचित 'मिथिला शब्द प्रकाश, 1914) रूपौली, झाँझारपुर: मिथिला बन्धु प्रकाशन
- [24] यादव डा. रामावतार, 2016, मैथिली आलेख संचयन, जनकपुर धाम, नेपाल : मैथिली विकास कोष
- [25] रमण फूलचन्द्र मिश्र, 2004, अभिज्ञा, तुमैल, पुतइ, दरभंगा: भारती मैथिली परिषद
- [26] चाटुर्ज्या डा. सुनीति कुमार, 1954, भारतीय आर्यभाषा और हिन्दी, राजकमल प्रकाशन
- [27] झा डा. विजयेन्द्र, 2023, मैथिली साहित्यक इतिहास, मुजफ्फरपुर: प्रतिभा प्रकाशन